International Journal of Advance and Applied Research
www.ijaar.co.in
ISSN – 2347-7075 Impact Factor – 7.328
Peer Reviewed Bi-Monthly
Vol.10 No.6 July – August 2023

महात्मा गॉंधी एवं गिजूभाई के शैक्षिक विचारों का वर्तमान शिक्षा के सन्दर्भ में तुलनात्मक अध्ययन

अमित कुमार यादव[1], डॉ. देवेन्द्र कुमार[2]

[1] शोधार्थी, शिक्षा शास्त्र , लार्ड्स विश्वविद्यालय अलवर (राजस्थान)

[2]शोध निर्देशक, एसोसिएट प्रोफेसर, शिक्षा विभाग , लार्ड्स विश्वविद्यालय अलवर (राजस्थान)

Corresponding Author - अमित कुमार यादव

DOI - 10.5281/zenodo.8278639

साराषं :

शिक्षा के प्रति गांधीजी और गिजूभाई दोनो कि विशेष सोच थी। जहॉं गांधीजी शिक्षा के माध्यम से शोषण विहीन समाज का निर्माण करना चाहते थे। व उनका मानना था कि किसी तरह जाति ,वर्ग ,लिंग का भेद न हो , सभी समरसता के साथ जी सके। उनका मानना था कि समाज के प्रत्येक सदस्य का शिक्षित होना जरुरी हैं। शिक्षा के बगैर एक आधुनिक समाज का सपना असम्भव ही हैं। गांधीजी का शिक्षा दर्शन बेहद व्यापक एवं जीवनोपयोगी हैं। उन्होंने शिक्षा के मुख्य सिद्धातों, उद्देश्यों तथा शिक्षा की योजना को मूर्त रूप देने का प्रयत्न किया। गांधीजी का आधुनिक शिक्षा दर्शन उन्हें समाज में एक शिक्षाशास्त्री का दर्जा दिलवाता हैं। वही गिजूभाई सीखने के विषय के अंतर्निहित विचार को समझने का प्रयास करते है। उनकी लड़ाई उपकरण और पढ़ाई की उन धारणाओं के विरोध में थी जो बच्चों को असफल बनाती हैं या उन्हें वास्तविक अनुभवहीन व्यक्ति बनने की अनुमति नहीं देती हैं। उनके अनुसार शिक्षण बहुत कठिन और महत्वपूर्ण कार्य हो सकता है और यह देखने के लिए कि क्या अच्छा काम करता है, प्रशिक्षक की ओर से ईमानदारी की आवश्यकता होती है।

कीवर्ड:- गिजुभाई, प्राथमिक शिक्षा, शिक्षा, छात्र, विचार, गांधीजी, आधुनिक समाज आदि।

प्रस्तावना:

शिक्षा संचार का एक प्रकार है जो ज्ञान, अनुभव, कौशल और विचारों को समाज के एक समूह से दूसरे समूह तक भेजता है। यह एक व्यक्ति के जीवन में एक स्थायी परिवर्तन उत्पन्न करता है जो उसे उसके व्यक्तिगत विकास और समाज की सेवा करने की क्षमता प्रदान करता है। शिक्षा मानव संसाधन को विकसितकरने के लिए महत्वपूर्ण है। यह समाज के लिए अनुशंसित ज्ञान, कौशल, और अभिरुचियों को प्रदान करता है। इसके द्वारा एक व्यक्ति न केवल अपने जीवन में सफलता हासिल करता है, बल्कि अपने समाज के विकास में भी योगदान देता है। शिक्षा एक प्रक्रिया है जो मानव जाति को स्वयं को विकसित करने और अपने समाज और संसार के साथ बेहतर सम्बन्ध बनाने के लिए ज्ञान, अनुभव, और नैतिक मूल्यों का अध्ययन और सीखने की अनुमति देती है। शिक्षा अपने शैक्षणिक, व्यावसायिक, सामाजिक, और नैतिक

दृष्टिकोण से मानव विकास के अविरल स्रोत होती है। इस दृष्टि से, शिक्षा से हम अपनी व्यक्तिगत विकास और समूह के साथ अपने संबंधों को बढ़ाने के लिए कुशलता और ज्ञान प्राप्त करते हैं।

महात्मा गाँधी

जीवन परिचय:-

महात्मा गाँधी का जन्म 2 अक्टूबर 1869 को गुजरात राज्य के पोरबंदर जिले के एक गरीब परिवार में हुआ था। उनके पिता का नाम करमचंद गाँधी एवं माता का नाम पुतलीबाई था। 13 वर्ष की अवस्था में उनका विवाह कस्तूरबा बाई के साथ हुआ। सन् 1887 ईस्वी में मैट्रिक की परीक्षा पास की फिर उन्होने श्यामल दास कॉलेज भावनगर में उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए दाखिला लिया। कॉलेज शिक्षा पास करने के बाद वे बैरिएट्रिक की पढ़ाई करने के लिए इंग्लैंड चले गए। और 1891 मे बैरिस्ट्रि पास करके भारत लौटे। भारत लौटने के बाद उन्होंने वकालत शुरू की।

उन्हें इस काम में भी विशेष सफलता नहीं मिली फिर गांधीजी 1893 में दक्षिण अफ्रीका गये। वहां उनका वास्तविक जीवन प्रारंभ हुआ उन्होने वहां भारतीयों की दशा सुधारने के लिए आंदोलन चलाये। वहां उन्होंने सत्य और अहिंसा के सिद्धांतों को व्यवहारिक रूप प्रदान किया। और उन्होने वहां 1914 तक संघर्ष पूर्ण जीवन व्यतीत किया और उनको उसमें सफलता भी मिली फिर वे इंग्लैंड होते हुए 1914 में भारत लौट आए। यहां आकर उनहोने भारतीय राजनीति में प्रवेश किया और अपने जीवन के अंतिम समय तक उन्होंने भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन का नेतृत्व किया। इनके नेतृत्व के फल स्वरूप भारतीय राजनीति में सत्य एवं अहिंसा को महत्वपूर्ण स्थान मिला। गांधीजी के नेतृत्व में भारत में 15 अगस्त 1947 को स्वतंत्रता प्राप्त की।

महात्मा गाँधी का शिक्षा दर्शन

राष्ट्रपिता, महात्मा गांधी न केवल एक राजनीतिक नेता थे, बल्कि एक महान धार्मिक विचारक और समाज सुधारक भी थे। उन्होंने अपने समय की किताबी, सैद्धान्तिक, संकीर्ण तथा परीक्षापरक शिक्षा में सुधार के लिए अनेक सुझाव भी दिये। शिक्षा जगत में वे एक शिक्षाविद् के रूप में प्रतिष्ठित हैं। गांधीजी शिक्षा को व्यक्ति का जन्मसिद्ध अधिकार मानते थे और किसी भी प्रकार की मानवीय प्रगति के लिए इसे आवश्यक मानते थे, चाहे वह शारीरिक हो या आध्यात्मिक। इसीलिए उन्होंने एक निश्चित आयु तक के बच्चों के लिए सामान्य शिक्षा के अनिवार्य प्रावधान पर जोर दिया और इसे निःशुल्क करने पर जोर दिया। उनका स्पष्ट मत था कि शिक्षा विदेशी भाषा अंग्रेजी के माध्यम से नहीं दी जानी चाहिए, यह शिक्षा केवल मातृभाषा के माध्यम से ही दी जानी चाहिए। वैसे भी वे अंग्रेजी को मानसिक गुलामी बढ़ाने वाली भाषा मानते थे। वह शिक्षा के माध्यम से मनुष्य को आत्मनिर्भर बनाना चाहते थे, जिससे वह अपनी आजीविका कमा सके, इसलिए उन्होंने हस्तशिल्प की शिक्षा पर विशेष जोर दिया। साथ ही वे मनुष्य की आध्यात्मिक उन्नति भी करना चाहते थे इसलिए

उन्होंने शिक्षा के माध्यम से मनुष्य को ग्यारह व्रत सत्य, अहिंसा, ब्रह्मचर्य, स्वाद, अस्तये , अपरिग्रह, अभय, अस्पृश्यता निवारण, शारीरिक श्रम का पालन करने की प्रेरणा दी। सभी धर्मों की समानता और (विनम्रता) करने की प्रेरणा दी। अपने शिक्षा दर्शन के आधार पर गांधीजी ने राष्ट्रीय शिक्षा का स्वरूप निश्चित किया और उसे बुनियादी शिक्षा का नाम दिया।

गिजूभाई बधेका

जीवन परिचय (1885-1939):

''गिजुभाई बधेका का जन्म 15 नवंबर 1885 को चित्तल सौराष्ट (गुजरात) में हुआ था। उनका पूरा नाम गिरिजाशंकर भगवान जी बधेका था। इस पूरे नाम की जगह लोग उन्हें गिजुभाई कहकर बुलाते थे। 1915 में वे श्री दक्षिणमूर्ति विद्यार्थी भवन के काननू ी सलाहकार बन गये। और 1918 में दक्षिणामूर्ति विद्यालय भवन के आजीवन सदस्य बन गय।े इस संस्था द्वारा एक बाल भवन चलाया जाता था, जिसका नाम विनय भवन था। गीजू भाई ने 4 वर्ष तक इस विनय भवन के आचार्य पद पर कार्य किया। 1920 में उन्होंने बाल मंदिर की स्थापना की और वकालत छोड़ दी और खुद को पूरी तरह से बाल शिक्षा के लिए समर्पित कर दिया और इस क्षेत्र में नए प्रयोग किए। उनका दक्षिणमूर्ति बाल मंदिर बच्चों के समुचित संवेदी विकास, शांतिपूर्ण खेल, शैक्षिक भ्रमण, शारीरिक श्रम, कहानियाँ सुनने का केंद्र था। जिसमें बच्चे हँसते-हँसते वांछित गतिविधियों में भाग लते हुए शिक्षा प्राप्त करते थे। भावनगर में तख्तेश्वर मंदिर के पास एक चबूतरे पर गीजू भाई द्वारा स्थापित बाल मिं दर का उद्घाटन 1922 में कस्तूरबा गांधी के कर कमलों से किया गया था। उन्होंने 1925 में भावनगर में पहला मोंटेसरी सम्मेलन आयोजित किया जिसके साथ उन्होंने पहला शिक्षण मंदिर स्थापित किया। 1938 में उन्होंने राजकोट में अध्यापन मंदिर की स्थापना की, जो शिक्षा के क्षेत्र में उनका अंतिम योगदान था। उनका पूरा जीवन बाल शिक्षा के क्षेत्र में नये-नये प्रयोग करते हुए बीता। बच्चों के साथ वह हमेशा तरोताजा महसूस करते थे। शिक्षा के क्षेत्र में लगातार लगे रहना उनकी सर्वाच्च उपलब्धि थी। उन्होंने विभिन्न विषयों की शिक्षा के साथ-साथ बच्चों में सत्य, अहिंसा, करुणा, सहयोग, सहकार जैसे मानवीय गुणों के विकास पर अधिक जोर दिया और शिक्षा के क्षेत्र में उन गतिविधियों को अपरिहार्य माना, जिनसे इन गुणों का विकास होता है।4

गिज्जूभाई के शिक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण विचार

गिज्जूभाई का शिक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान है। गिज्जूभाई ने शिक्षा के क्षेत्र में अनेक महत्वपूर्ण विचार प्रस्तुत किए। गिज्जूभाई का मुख्य उद्देश्य एक ऐसे विद्यालय एवं ऐसी शिक्षा व्यवस्था का विकास करना था जो बालकों के समग्र इन्द्रिय विकास, शारीरिक विकास, शैक्षिक भ्रमण, कथा कहानी जैसी प्रवृत्तियों का केन्द्र हो । जहाँ बालक हँसते, खेलते तथा रुचिपूर्ण गतिविधियों में सक्रियता के साथ भाग लेते हुए शिक्षा ग्रहण करें।5

गिज्जूभाई ने बाल-केन्द्रित शिक्षा पर बल दिया। बाल-शिक्षा के जगत में गिज्जूभाई की एक अनमोल कृति 'दिवा-स्वप्न' है । इस कृति में गिज्जूभाई की बाल-केन्द्रित शिक्षा सम्बन्धी महत्वपूर्ण विचार वर्णित हैं, जिनका संक्षिप्त विवरण निम्नलिखित प्रकार से है ।

अध्यापक -

गिज्जूभाई चाहते थे कि 'दिवा-स्वप्न' पुस्तक में जिन-जिन बातों का निर्देश किया गया है, वे सब वर्तमान प्राथमिक शाला के शिक्षकों के लिए दिवा स्वप्न की वस्तु बनें। बाल-शिक्षण विषयक शिक्षा-प्रणाली के जिन नियमों का व्यवहार वे अपने बाल मन्दिर में कर रहे थे, उन नियमों को प्राथमिक शालाओं के अनुकूल कैसे बनाया जा सकता है। इस पर उन्होंने इस पुस्तक में अपने व्यावहारिक विचार प्रकट किये। गिज्जूभाई ने शिक्षकों के स्वभाव में समर्पण की भावना उत्पन्न करने के लिए लिखा है, "हमारी वर्तमान प्राथमिक पाठशाला का शिक्षक अज्ञानी है, नौकर है, धन का लोभी है और अपने आप में अविश्वास रखने वाला है।

शिक्षण-

गिज्जूभाई की एक अनुपम कृति "प्राथमिक शाला में भाषा शिक्षा'' है। इस पुस्तक में एक शिक्षक और बालक के बीच की उस प्रक्रिया की चर्चा है, जिससे बालक के भाषा शिक्षा की बुनियाद तैयार होती है। इस पुस्तक के चार खण्ड हैं। प्रथम खण्ड में माइकेल वेस्ट (सन् 1920) की भाँति सबसे पहले वाचन पर बल दिया गया है। इसके पश्चात् वे रेखा-चित्रण से लेखन को प्रारम्भ करते हैं। उँगलियों को कलम पकड़ने का तरीका, पेन्सिल पर पकड़, इच्छानुसार मोड़ना और उल्टी-सीधी आकृतियों से अक्षर आकृति तक जाना इत्यादि लेखन की प्रथम आवश्यकता है। उनके अनुसार श्रुत लेखन से लेखन की गति तो बढती ही है साथ ही साथ सही लिखने की आदत भी पड़ती है।

कविता-

शिक्षण लोकगीतों में गेयता, डोलन, ताल की स्पष्टता और उचित विषय-वस्तु के होने पर बालक उनकी ओर आकृष्ट होता है। लोकगीतों के माध्यम से छात्रों का काव्य-शिक्षण प्रारम्भ किया जाय। बालकों के सम्मुख कविता वह रखी जाए, जिसकी भाषा बोधगम्य हो तथा विषय-वस्तु वर्णनात्मक या कथात्मक हो। कविता का परिचय गाकर ही कराया जाय, उसे रटाना भी आवश्यक नहीं है। केवल रसानुभव पर ही कविता आत्मसात हो जाती है।

व्याकरण शिक्षण-

गिज्जूभाई के अनुसार पाठ में संज्ञा, क्रिया, सर्वनाम, विशेषण पद की पहचान खेल-खेल में की जा सकती है। अपने दिवा स्वप्न में अध्यापक लक्ष्मीशंकर के माध्यम से सफलतापूर्वक व्याकरण शिक्षण विधि प्रयुक्त की है।

इतिहास शिक्षण-

बच्चों के लिए इतिहास कहानी के रूप में रोचक बनानी चाहिए। उसमें कहानीपन तो होना ही चाहिए, साथ ही पढ़ने के इतिहास को मूल घटना के आसपास समान काल्पनिक घटनाओं से सजाया जाना चाहिए।

भूगोल-

शिक्षक को भूगोल पढ़ाने में ग्लोब और नक्शों की सहायता लेकर तथ्यों को प्रस्तुत करना चाहिए।

धार्मिक शिक्षा-

छोटे बच्चों की पाठ्य पुस्तकों में धार्मिक पुरुषों तथा उनके जीवन के प्रसंगों पर कथाएँ होनी चाहिए। धर्म की गम्भीर बातों को छोटे बच्चे नहीं समझ पाते हैं। उन्हें पुराण और उपनिषद् की कथाएँ भी बताई जा सकती हैं। कर्मकाण्ड, श्लोक पाठ, धार्मिक पुस्तकों का अध्ययन आदि को हम भविष्य के लिए छोड़ सकते हैं।

खेल-कूद-

बच्चों को नियत समय में खेलने देना चाहिए। खेलने का मतलब खेलना, कूदना, दौड़ना और मौजकरना है। इसमें हारने-जीतने का कोई महत्व नहीं होना चाहिए। पुरस्कार से उनमें छोटे-बड़े की भावना उत्पन्न होती है।

अध्ययन का उद्देश्य-

- महात्मा गॉधी एवं गिजूभाई के शैक्षिक विचारो का वर्तमान शिक्षा के सन्दर्भ में तुलानात्मक अध्ययन।

कार्यप्रणाली:

अध्ययन की प्रकृति को देखते हुए हमने वतर्मान शोध कार्य को पूरा करने के लिए तुलनात्मक पद्धति का प्रयोग किया हैं। वत र्मान अध्ययन की प्रकृति गुणात्मक है क्योंकि यह महात्मा गांधी के शैक्षिक विचारो और गिजूभाई के शैक्षिक विचारो का अध्ययन करता है। हमारे डेटा के स्रोत वत र्मान अध्ययन महात्मा गांधी के शैक्षिक विचारो और गिजूभाई के शैक्षिक विचारो पर आधारित है। इसलिए, हमने शोधपत्र के लिए विभिन्न स्रोतों से जानकारी एकत्र करने का निर्णय लिया है। इस लिए आवश्यक जानकारी प्राप्त करने के लिए हमने प्रासगिक साहित्य का व्यापक उपयोग किया है। डेटा के प्राथमिक और द्वितीयक दोनों स्रोतों का उपयोग किया गया है। डेटा पत्रिकाओं, समाचार पत्रों, पुस्तकों, ऑनलाइन पोट र्लों, समाचार पत्रो के लेखों (घटनाओं की रिपोर्टिंग), तस्वीरों, आत्मकथाओं, व्यक्तिगत आख्यानों, पांडुलिपियों और डेटा के अन्य स्रोतों से एकत्र किया गया है।

परिणाम और चर्चा:

वर्तमान संदर्भ में शिक्षा के गांधीवादी विचार की प्रासंगिकता:

कार्य उन्मुख:

उनका विचार था कि शिक्षा के माध्यम से हम बच्चो के शरीर, दिमाग और आत्मा में सर्वश्रेष्ठ परिर्वतन कर सकते है। उन्होंने आगे कहा कि साक्षरता अपने आप में शिक्षा नहीं है। उनके अनुसार शिक्षा बेरोजगारी के विरुद्ध एक प्रकार का बीमा होना चाहिए। इसके लिए उन्होंने उद्योग द्वारा शिल्प और शिक्षा पर ध्यान केन्द्रित किया। यदि हम वत र्मान परिदृश्य को देखें तो हम सभी को लगता है कि इस प्रकार की शिक्षा की आवश्यकता है क्योंकि यदि हम अपने चारों ओर देखें तो हमें कई बेरोजगार

और अल्परोजगार वाले युवा इधर-उधर घूमते हुए दिखाई दंगे। अतः युवावस्था में असंतोष एवं अवसाद की भावना पनपती है। युवाओं को काम के लिए दूसरे देशों की ओर देखना पड़ता है। उदाहरण के लिए, भारत के पंजाब राज्य में लगभग 80 प्रति परिवार ऐसे हैं जिनके सदस्य विदेश में काम करते हैं और भारत में रहने वाले अपने परिवारों को पैसे भेजते हैं। अतः सरकार को शिक्षा पर ध्यान देना होगा ताकि वह कार्यान्मुख हो। 2020 कीराष्ट्रीय शिक्षा नीति में शिक्षा के व्यावसायीकरण को अधिक महत्व दिया गया, जिसे हम कह सकते हैं कि हम गांधीजी के शैक्षिक विचारो का अनुसरण करते हैं।

चरित्र निर्माण:

उनके शैक्षिक दर्शन में साक्षरता की अपेक्षा चरित्र निर्माण को अधिक महत्व दिया गया क्योंकि चरित्र में आत्मा की पवित्रता, विचार, क्रियाकलाप तथा अहिंसा का समावेश होता है। जब हम अमेरिका, ब्रिटेन की मीडिया की सुर्खियों पर नजर डालते हैं तो हमें पता चलता है कि इन देशों के स्कूलों में होने वाली हिंसा की घटनाएं दिन-ब-दिन बढ़ती जा रही हैं और इन देशों के शिक्षक आज बहुत चिंतित हैं। हम भी महसूस करते हैं कि समाज का चरित्र गिर रहा है और इसे ऊपर उठाने की जरूरत है। आज राजनीतिक दल भी अपने मुद्दों को उठाने के लिए हिंसा का सहारा ले रहे हैं, जो लोकतंत्र के लिए गंभीर खतरा है। औद्योगीकरण और जीवन यापन की बढ़ती लागत के बाद, अब पुरुष और महिलाएं अपनी दैनिक जरूरतों को पूरा करने के लिए काम करते हैं। कभी-कभी उन्हें अपने कार्यालयों के लिए देर हो जाती है और कार्यालय से घर जाते समय रास्ते में असामाजिक तत्वों के आने से वे हमेशा भयभीत रहते हैं। ये असामाजिक तत्व आत्मा और विचारों की अशुद्धता का परिणाम हैं। आजकल, कंपनियों को ऐसे लोगों की भी आवश्यकता होती है जो काम में ईमानदार, मजबूत और मददगार हों। इसलिए यहां जरूरत इस बात की है कि स्कूल में गांधी जी के विचारों के अनुरूप पाठ्यक्रम बनाया जाए और उन्हें भगवत गीता, उपनिषद, अध्यात्म, ध्यान सिखाया जाए ताकि बाद में उनकी आत्मा और विचारों में शुद्धता आ सके और वे अहिंसा के मार्ग पर आगे बढ़ सकें।

सामाजिक विकास:

गांधी जी के विचार के अनुसार शिक्षा केवल ज्ञान प्रदान करने के लिए नहीं होनी चाहिए, बल्कि बच्चे के सामाजिक विकास पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए। बच्चे को समाज में रहना और समाज के नियमों का पालन करना सीखना चाहिए।

अब दुनिया सामाजिक गतिशीलता के दौर से गुजर रही है। क्योंकि समाज में सामाजिक अशांति है और जिम्मेदार व्यक्ति ही समाज के सौहार्द को बनाए रखने में मदद कर सकते हैं, अन्यथा सामाजिक अशांति हो सकती है। यह उस लोकतांत्रिक व्यवस्था को नुकसान पहुंचा सकता है जिसे गांधीजी ने हमेशा बढ़ावा दिया था। अनुशासन और जिम्मेदारी बाहर से नहीं थोपी जा सकती बल्कि भीतर से आनी चाहिए। जब आप इसे जीवन में अपनाएंगे, तो आपका जीवन अधिक सुंदर होगा और आप अपने माता-पिता, बहन, भाई, पत्नी,

पड़ोसियों, दोस्तों, सहपाठियों, सहकर्मियों, कनिष्ठ, वरिष्ठ आदि के साथ स्वस्थ संबंधों का आनंद ले सके गे।

महिला शिक्षा:

गांधी जी महिलाओं की शिक्षा के पक्षधर थे। गांधी जी ने महिलाओं की मुक्ति पर पुरा जोर दिया। उन्होंने पर्दा, बाल विवाह, अस्पृश्यता और हिंदू विधवाओं और सती पर अत्यधिक अत्याचार का विरोध किया।

कोठारी आयोग और नई शिक्षा नीति में भी यही अनुशंसा की गई है। भारत सरकार इस दिशा में काम कर रही है और महिला शिक्षा की स्थिति पहले की तुलना में बेहतर स्थिति में है। आजकल सरकार महिलाओं की बेहतरी के लिए नौकरियों, राजनीति आदि में आरक्षण देने की कोशिश कर रही है। इस लिए 2020 की राष्ट्रीय शिक्षा नीति में महिलाओं को विशेष महत्व दिया गया है।

एनईपी 2020 का उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षक भर्ती में लैंगिक असमानता के मुद्दे को संबोधित करना है। नीति में नए तरीकों को अपनाने की उम्मीद है जो सुनिश्चित करेंगे कि योग्यता को ध्यान में रखा जाए और महिला शिक्षकों को भर्ती के लिए उचित मंच प्रदान किए जाएं।

अहिंसा की प्रासंगिकता:

अहिंसा गांधीवादी शैक्षिक विचार का एक प्रमुख घटक है, जो ब्रिटिश राज के खिलाफ भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान गांधीजी द्वारा इस्तेमाल किया गया महान हथियार था। गांधीजी का मानना था कि अहिंसा और सहिष्णुता के लिए उच्च स्तर के साहस और धैर्य की आवश्यकता होती है। एक ऐसी दुनिया में जो हिंसा और आतंकवाद द्वारा चिह्नित युद्ध के चरणों से गुजर रही है। गांधीजी के अहिंसा के विचार की एक महत्वपूर्ण आवश्यकता पिछले दिनों की तुलना में आज अधिक से अधिक हो गई है। अंतर्राष्ट्रीय अहिंसा दिवस 2 अक्टूबर को भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के नायक महात्मा गांधीजी की जयंती पर मनाया जाता है। संयुक्त राष्ट्र महासभा (यूएनजीए) ने 15 जून, 2007 को अपनाए गए एक प्रस्ताव में, शिक्षा और सार्वजनिक जागरूकता के माध्यम से अहिंसा के संदेश को फैलाने के अवसर के रूप में इस स्मरणोत्सव की स्थापना की। यह प्रस्ताव अहिंसा के सिद्धांत की सार्वभौमिक प्रासंगिकता और शांति, सहिष्णुता, समझ और अहिंसा की संस्कृति सुनिश्चित करने की इच्छा की पुष्टि करता है।

लोकतांत्रिक मूल्यों पर जोर:

शिक्षा पर गांधीजी के विचार बालक में लोकतांत्रिक मूल्यों के विकास पर बल देते थे। गांधी के अनुसार, नागरिक भावना का पर्याप्त विकास और पर्यावरण के साथ समायोजन बच्चों को देश के योग्य नागरिक बनाएगा।

शिक्षा पर गांधीजी के विचार समाज की वर्तमान परिस्थितियों में बहुत प्रासंगिक प्रतीत होते हैं। गांधीजी का शिक्षा संबंधी दृष्टिकोण वास्तव में समकालीन परिस्थिति के लिए प्रासंगिक है। कोठारी आयोग ने रिपोर्ट दी "सामंती और पारंपरिक समाज द्वारा निर्धारित बाधाओं के भीतर शाही प्रशासन की जरूरतों को पूरा करने के लिए डिज़ाइन की गई

वर्तमान शिक्षा प्रणाली को आधुनिकीकरण वाले लोकतांत्रिक और समाजवादी समाज के उद्देश्यों को पूरा करने के लिए आमूल-चूल परिवर्तन की आवश्यकता होगी। वास्तव में, जिस चीज़ की आवश्यकता है वह है शिक्षा का पुनर्मूल्यांकन जो बदले में लंबे समय से प्रतीक्षित सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक क्रांति की शुरूआत करेगा।

''वसुधैव कुटुंबकम'' का विचार:

आज पूरी दुनिया वैश्वीकरण के अनुरूप है। जिसके माध्यम से आज गांधीजी के ''वसुधैव कुटुंबकम'' के लक्ष्य को साकार किया जा सकता है। उन्होने कहा है कि बेसिक शिक्षा योजना में लड़के और लड़कियों में कोई भेदभाव नहीं किया जाना चाहिए। इतना ही नहीं, उन्होंने सार्वभौमिकरण और अंतर्राष्ट्रीयता के बारे में सोचा जहां सभी देश एक-दूसरे के साथ सहयोग करेंगे। वैश्विक स्तर पर निरतं र बढ़ते विकास के कारण, स्वतंत्र राष्ट्र-राज्यों के अस्तित्व के बावजूद, आज हमारे सामने परस्पर निर्भरता की एक उन्नत स्थिति है।

इसे दुनिया के देशों की मजबूरी माना जाए तो कोई बात नहीं, लि कन साथ मिलकर आगे बढ़ना अब अपरिहार्य है। विश्व के सभी नागरिकों के लिए एक साथ मिलकर काम करना आवश्यक है। ऐसी स्थिति में महात्मा गांधी के सुझाव एवं समय-समय पर उनके द्वारा व्यक्त किये गये विचार, जो अंतर्राष्ट्रीयता से ओत-प्रोत हैं, अपनी अनुकूलता एवं सार्थकता सिद्ध करते हैं। यह बेहतर और लाभदायक होगा यदि दुनिया के राष्ट्र गांधीजी के विचारों और सुझावों को केंद्र में रखकर मजबूरी की स्थिति में काम करने के बजाय समय और स्थान की मांग के अनुसार सद्भाव की स्थिति में काम करने के लिए आगे आएं। यदि आप सामूहिक रूप से अनुकूल माहौल बनाते हैं, तो दुनिया में हर कोई अच्छा करेगा।

शुरुआत में हमने अंतर्राष्ट्रीयता के प्रति भारत की प्रतिबद्धता पर चर्चा की। महात्मा गांधी चाहते थे कि भारत शांति और समृद्धि के लिए समर्पित विश्व व्यवस्था की स्थापना के लिए खड़ा हो। वह यह भी चाहते थे कि भारत इस विशाल कार्य को अपनी जिम्मेदारी समझकर पूरा करे। यह संभव है क्योंकि भारत अपने अद्वितीय मूल्यों, अनुकरणीय संस्कृति और अहिंसा के प्रति प्रतिबद्धता के कारण ऐसा करने में सक्षम है। अतः भारत को सच्ची एवं वास्तविक अंतर्राष्ट्रीयता की स्थापना के लिए आगे बढ़ना चाहिए और ऐसा करके स्वयं को विश्व में दूसरों के लिए आदर्श बनाना चाहिए।

प्रौढ़ शिक्षा:

गांधीजी को बहुत पहले ही एहसास हो गया था कि वयस्क मन को जागृत और पुनर्निर्देशित करकेही समाज को नए और स्वस्थ आधार पर संगठित किया जा सकता है। नवंबर 1949 में मैसूर में वयस्क शिक्षा पर आयोजित यूनेस्को सेमिनार में वयस्क शिक्षा की परिभाषा पर चर्चा की गई। उसके बाद, निम्नलिखित निष्कर्ष पर पहुंचा गया। वयस्क शिक्षा का अर्थ है 18 वर्ष से अधिक उम्र के प्रत्येक वयस्क की न्यूनतम बुनियादी शिक्षा से होता है, लेकिन इस प्रकार की शिक्षा का लाभ संशोधित

किया जा सकता है और उस उम्र से कम उम्र के किशोरों तक बढ़ाया जा सकता है।

केंद्र सरकार ने वित्तीय वर्ष 2022-27 के लिए ''न्यू इंडिया लिटरेसी प्रोग्राम'' को मंजूरी दे दी है, जो अब राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 के अनुरूप देश में वयस्क शिक्षा के सभी पहलुओं को कवर करेगा। ''प्रौढ़ शिक्षा'' को अब ''सभी के लिए शिक्षा'' कहा जाएगा। शिक्षा के लिए उम्र कोई बाधा नहीं है और एनईपी 2020 नीति में इस पर बहुत अधिक ध्यान केंद्रित किया गया है। शिक्षा का महत्व सभी जानते हैं और किसी भी समय इसकी राह पर चलना सही समय है।

वर्तमान भारतीय संदर्भ में गिजू भाई के शैक्षिक चिंतन की प्रासंगिकता:

राष्ट्र एवं समाज की दशाओं के साथ-साथ शैक्षिक दशाओं में भी निरंतर परिवर्तन होता रहता है। ज्ञान-विज्ञान के विकास का प्रभाव जीवन के प्रत्येक क्षेत्र पर पड़ता है। वाद-प्रतिवाद संवाद, तत्पश्चात् इसी क्रम की निरंतर पुनरावृत्ति से ही विचारों का विकास होता है। देश-काल व परिस्थितियों के अनुरूप इन विचारों की उपयोगिता के परीक्षण - पुनर्परीक्षण की प्रक्रिया सदैव चलती रहती है। वस्तु विकास का आधार ही यह है।

गिजुभाई के अनुसार, ''एक बच्चा एक संपूर्ण व्यक्ति होता है जिसके पास बुद्धि, भावनाएं, दिमाग और समझ, ताकत और कमजोरियां, पसंद और नापसंद होती है...''. बच्चे की भावनाओं को समझना और ऐसा माहौल बनाना बहुत महत्वपूर्ण है जहां बच्चे औपचारिक परीक्षाओं और ग्रेडेशन के डर के बिना खेल, कहानियों और गीतों के माध्यम से एक-दूसरे से सीखें। उन्होंने ''स्कूल'' के स्थान पर ''मंदिर'' शब्द को प्राथमिकता दी (जैसे प्राथमिक, मध्य और उच्च विद्यालय के बजाय बाल मंदिर, किशोर मंदिर, विनय मंदिर) यह इंगित करने के लिए कि यह एक ऐसा स्थान है जहां बच्चे को पीटा नहीं जाएगा, अपमानित नहीं किया जाएगा या उपहास नहीं किया जाएगा। गिजुभाई ने ज़ोर देकर कहा कि बच्चों पर वयस्क विचार थोपने के बजाय उन्हें उनकी उम्र और रुचि के अनुसार खेल-खेल में कुछ सीखने का अवसर दिया जाना चाहिए। उन्होंने शिक्षा के कृत्रिम, कठोर, असहानुभूतिपूर्ण तरीकों को अस्वीकार कर दिया, जो सभी प्राकृतिक प्रवृत्तियों का दमन करते थे। उनके अनुसार, शिक्षा को तर्कसंगत, सामंजस्यपूर्ण रूप से संतुलित, उपयोगी, प्राकृतिक जीवन में विकास की एक प्रक्रिया होनी चाहिए। मोंटेसरी की तरह गिजुभाई का मानना था कि बच्चे की शिक्षा भीतर से होती है। शिक्षा को बच्चे के व्यक्तित्व को पूर्ण रूप से उजागर करने में मदद करनी चाहिए।

दूसरे शब्दों में, उन्होंने बच्चे के सर्वांगीण विकास के लिए शिक्षा की वकालत की। इसके अलावा, उन्होंने बच्चों की शिक्षा में इंद्रिय प्रशिक्षण, मोटर दक्षता और स्वयं सीखने के महत्व को पहचाना और इस बात पर जोर दिया कि शिक्षा को इन चीजों को प्रदान करना चाहिए। कुल मिलाकर, उन्होंने छोटे बच्चों के प्रति सम्मान को बरकरार रखा

और पूर्ण स्वतंत्रता के माहौल में ‘‘जीवन के माध्यम से सीखने के लिए शिक्षा’’ की वकालत की। ,

गिजू भाई ने हमेशा ऐसा माहौल बनाने की कोशिश की जहां बच्चा आसान तरीके से अपनी बात कह सके। उनके विचार स्थिति के आसान विवरण और उस स्थिति में आने वाली समस्या से निपटने के लिए उनके द्वारा की जा रही कार्रवाई में निहित हैं। वह भारतीय संदर्भ में नंबर एक निर्देशों की स्थितियों के भीतर प्रतिक्रिया करने और कार्य करने के लिए पूरी तरह से सहज सामान्य ज्ञान के साथ एक चिंतनशील शिक्षक के उदाहरण के रूप में खड़े हैं। उनके लिखने का अंदाज ऐसा है मानो वह किसी से बात कर रहे हों और ऐसा महसूस होता है कि ये उनके अपने वाक्यांश और मन ही हैं जिन्हें कोई व्यक्ति इस आकार में लाने और उत्तर भी लाने का साहस कर सकता है। बहुत से लोगों ने ऐसा ही किया होगा या वही करना पसंद करेंगे जो गिजुभाई ने चुनौती की रणनीति के रूप में तय किया था। उनकी सरलता उस दृढ़ विश्वास में है जिसके साथ वह लिखते हैं और इसके अलावा वह जो कर रहे हैं उसकी व्यावहारिकता में भी है। एक और बहुत ही महत्वपूर्ण बिंदु जो कोई अपने दिमाग को व्यावहारिक कहने के लिए प्रकट करता है, वह यह है कि सैद्धांतिक और दार्शनिक दृष्टिकोण या शर्तों के शब्दजाल में उनके चिंतनशील और विश्लेषणात्मक बलों की कमी रही है जो हम उनके कार्यों में देखते हैं, जिससे उन्हें नियमित मांग से जुड़ना आसान हो जाता है। एक नंबर एक प्रशिक्षक की स्थितियाँ शिक्षक के रूप में अधिकांश लोगों के लिए किसी भी सिद्धांत को न भूलना विशेष रूप से कठिन होता है और इसके निहितार्थ की खोज करना लगभग असंभव होता है। उनके जैसे काम पूरी तरह से यथार्थवादी बिल हैं और किसी भी नंबर एक शिक्षक के लिए अपने अध्ययन कक्ष में प्रयास करने के लिए तैयार हैं।

लेकिन अवधारणा और दर्शन के सभी निहितार्थों का ताना-बाना समान रूप से है। उनके विचारों की उत्पत्ति ‘‘शिशु-केंद्रित’’ शिक्षा में हुई है और वह अपनी कक्षा में बच्चों के साथ अनुभव के कई उदाहरण देते हैं। इसलिए गिजुभाई को चिंतनशील शिक्षक के रूप में जाना जा सकता है जिनकी अवधारणा सरल है और मुख्य रूप से प्रयोग पर आधारित है। उनकी कृतियाँ दिवास्वप्न, माता पिता से और अन्य शिक्षा पर उनके विचारों को मजबूत करती हैं कि वह हमसे क्या उम्मीद करते हैं क्योंकि वह हमें आगे ले जा रहे हैं। वह प्रशिक्षण की वास्तविक प्रकृति को परेशान कर रहा है। उनके कार्य हमें न केवल बच्चे की अच्छाई, वास्तविक सीखने की प्रकृति बल्कि बच्चे को पढ़ाने के लिए माता-पिता और शिक्षक के रूप में वयस्कों कीमहत्वपूर्ण स्थिति और कर्तव्य की भी याद दिलाते हैं। युवाओं को महत्वपूर्ण तरीके से पढ़ाने का उनका प्रयोग सिद्धांत और व्यवहार के बीच युद्ध से शुरू होता है। वह स्कूल के कमरे का ‘‘प्रथम अनुभव’’ लेना चाहता है। स्कूली शिक्षा का असली मकसद जो शिक्षक को समझना चाहिए वह यह है कि बच्चों को अपने स्कूल और शिक्षकों से प्यार करना चाहिए। यदि बच्चे स्कूल वापस आना चाहते हैं क्योंकि

उनके साथ अच्छा व्यवहार किया जाता है और पर्याप्त महत्वपूर्ण ज्ञान प्राप्त करने के अवसर हैं, तो उन्हें लगता है कि कोई भी युवा स्कूल आने से इनकार नहीं कर सकता है। गिजुभाई ने कहानी सुनाने, नाटक, खेल और पेपर फोल्डिंग जैसे खेलों के ज्ञान प्राप्त करने के कुछ उपयोगी उदाहरणों का हवाला दिया है, जो नंबर एक स्तर पर शिक्षण-ज्ञान प्राप्त करने के कई उद्देश्यों को पूरा करेंगे और इसे युवाओं के लिए प्रासंगिक बनाएंगे। हालाँकि, इस प्रकार की तकनीकों को पाठ्यक्रम से जोड़ना शिक्षक की प्रवृत्ति ही वास्तविक उद्यम है और होना भी चाहिए। वास्तविक पढ़ाई भी महारत हासिल करना है जिसमें बच्चे काम करके सीखते हैं और इसलिए अपनी पढ़ाई के प्रति स्वतंत्र होते हैं और रिकॉर्ड के स्रोत के रूप में पाठ्यपुस्तक या शिक्षक पर निर्भर नहीं रहते हैं। दिवास्वप्न में गिजुभाई के शब्दों में, वह जो सोचते हैं वह वीडियो गेम हैं, गेम वास्तविक शिक्षा हैं। खेल के मैदान में महान शक्तियों का जन्म होता है। खेलों का अर्थ है पुरुष या महिला निर्माण करना। धार्मिक शिक्षा के विपरीत बच्चों को शुल्क शिक्षा प्रदान करने के बारे में उनके विचारों को उनके शब्दों में खोजा जा सकता है। हमें विश्वास पर बने रहने का प्रयास करना चाहिए। माता-पिता को प्रयास करना चाहिए, शिक्षकों को प्रयास करना चाहिए। हमें युवाओं को पुराणों और उपनिषदों की कहानियाँ सुनानी चाहिए, जब भी उनकी पाठ्यपुस्तकों में इनका संदर्भ हो। आइए हम उन्हें संतों की यादें उसी तरह बताएं जैसे हम उन्हें ऐतिहासिक शख्सियतों की गवाहियां बताते हैं। हमें अब अपने बच्चों को पवित्र छंद याद करने और सुनाने की अनुमति न दें! आइए हम नैतिक मार्गदर्शन के नाम पर धार्मिक हठधर्मिता और धर्मग्रंथ वगैरह न पढ़ाएं। इस तरह वह इतिहास, भाषा या परीक्षा की तैयारी या स्कूल विशेषता के विशिष्ट क्षेत्रों में बच्चों के लिए महत्वपूर्ण प्रशिक्षण के लिए बहस करने की कोशिश करता है। उनका तर्क है कि जिन तकनीकों का हम अनुपालन करते हैं उनकी अंतर्निहित धारणाओं में खामियां हैं इसलिए इस पर दोबारा गौर करने की जरूरत है। इससे वैकल्पिक रणनीतियाँ या एक ही पद्धति का उपयोग अधिक प्रभावी और सटीक तरीके से किया जा सकेगा। उनका मानना है कि किसी भी विषय वस्तु के लिए प्रशिक्षक को अंतर्निहित अवधारणा को स्पष्ट करना चाहिए और फिर बच्चों को खेल के माध्यम से उसे समझने में मदद करनी चाहिए।

विचार और विचारों का कार्यान्वयन:

उन्होंने उन विकल्पों में दृढ़ विश्वास रखा जिन्हें वे बच्चों के साथ आज़माना चाहते थे और व्यापार को व्यवहार्य बनाना चाहते थे। प्रशिक्षक के रूप में हमने उन तर्कों पर संशोधनों और विकल्पों के लिए बहसकरना बंद कर दिया है, जो कहते हैं कि ये व्यवहार्य नहीं हैं या बहुत आदर्शवादी हैं या कई अन्य तुलनीय तर्कों पर हैं। गिजुभाई ने यह घोषणा करके इसे व्यवहार्य बना दिया कि प्रयोग परिवर्तन लाने की कुंजी है। परीक्षण करने, मौजूदा मशीन, रणनीतियों और यहां तक कि व्यक्तिगत प्रशिक्षक या छात्र की विफलता पर दोषारोपण करने की अथक भावना वाला एक प्रशिक्षक, प्रारंभिक शिक्षा प्राप्त

करने के तरीके के रूप में कई चीजों का प्रयास कर सकता है और जो केवल परीक्षण और कुछ बाहरी के लिए ही नहीं है मेरी स्वयं की प्रशंसा करें। हालाँकि, पुरस्कार, तालियाँ और उचित अंक के बाहरी पुरस्कार भी उसे शिक्षा के प्रयोग में उपयोग करने से पूरे होते हैं। यह इस तथ्य के कारण ईमानदार है कि उनके प्रयासों को गड़बड़ियों, शंकाओं और साथी शिक्षकों की शिकायतों, परिवार की जिम्मेदारियों, सुरक्षित प्रक्रिया और कागजी कार्रवाई के उत्पीड़न की शिकायत के साथ पूरा किया जाता है। यह सब एक सामान्य मानव की वास्तविकता भी है और एक प्रणाली में एक प्रक्रिया की भी। गैजेट परिवर्तन और हमारे चरित्र की इच्छाओं और संतुलन, अस्तित्व की सामाजिक अपेक्षाओं के प्रति प्रतिकूल प्रतीत होता है जो प्रकृति में आर्थिक और सामाजिक दोनों है। सभी लोगों को उपकरण, नौकरी और हमारी निजी जरूरतों की मांगों को पूरा करना कठिन लगता है। लेकिन गिजुभाई ने इसका उत्तर यह कहकर दिया कि कुंजी भीतर छिपी है। एक बार जब हम सिस्टम के बारे में सोचना शुरू करते हैं और यह पहचानते हैं कि प्रशिक्षण की हमारी गतिविधि को हरित तरीके से करना हमारी व्यक्तिगत आवश्यकता भी है। अच्छा शिक्षण ही वास्तविक आनंद और विकल्प की कुंजी है। उन्होंने अपने पहले प्रयास में ब्रेकडाउन को उठाया और गिजुभाई का प्रयास या कार्यान्वयन इसी के साथ शुरू हुआ। उनके शिक्षण के पहले दिन ने उन्हें यह एहसास कराया कि उनकी योजनाएँ उस तरह से काम नहीं कर सकती हैं जैसा उन्होंने योजना बनाई है, जैसा कि उन्होंने दिवास्वप्न के पहले अध्याय में वर्णित किया है। उनकी कक्षा के छात्रों ने मौन, जागरूकता और चर्चा की उनकी योजनाओं पर प्रतिक्रिया नहीं दी जैसा उन्होंने योजना बनाई थी। हमारे प्रयोग अब काम नहीं कर रहे हैं, यह एक ऐसी बात है जिससे सभी नंबर वन शिक्षक सहमत होंगे। लेकिन वह अपने प्रयोग के साथ-साथ यादों और वीडियो गेम के तरीकों को विकसित कर सके ताकि छात्रों को केवल रटने की बजाय वास्तविक सिद्धांतों में रुचि हो। कोई यह कह सकता है कि वह अपने नए प्रयोगों की कम से कम इतनी उपलब्धि दर निर्धारित कर सकता है जो उसने तब भी जारी रखी जब हममें से अधिकांश को आपदाओं के कारण अपमानित होने की संभावना है। हो सकता है कि वह सामाजिक या नौकरशाही जरूरतों के कारण ज्यादा बदलाव न कर पाएं लेकिन फिर भी वे जिन बदलावों का जिक्र करते हैं उनमें से कुछ सकारात्मक संकेत हैं। मान लीजिए कि बच्चों को परीक्षाओं के लिए तैयार करने की आवश्यकता है, लि कन उन्हें पढ़ने और खेलने के लिए समय दें, न कि केवल कागज-पेंसिल की जिम्मेदारियों पर ध्यान दें। दिवास्वप्न का उनका लेखन विशेष रूप से ऐसे नए विचारों, उलझनों, शर्मिंदगी और समाधानों का ताना-बाना है। इससे पाठक को बहुत सामान्य और मानवीयसमझ आती है कि प्राथमिक प्रशिक्षकों की प्रक्रिया शायद यही सब है लेकिन थोड़ी बहुत वास्तविक उपलब्धि भी संभव है। उनके द्वारा एक बहुत ही अनोखी परीक्षा यह थी कि दिन को खेल, खेल और कहानियों में विभाजित किया जाए और समय सारणी के सख्त अधिकार के माध्यम से पारित

न किया जाए। वह बच्चों के साथ अपने दिन बिताने के लिए अपने अंतर्ज्ञान का उपयोग करता है। उनके कार्यों में सही और उपयोगी कोचिंग प्रथाओं के कई अन्य कार्य देखे और खोजे जा सकते हैं।

गिज्जूभाई देश के जाने-माने शिक्षक थे। पेशे से वकील होने के बाद भी उन्होंने स्वयं शिक्षण कार्य किया। पाठशालाये खोली। स्वानुभूत शिक्षण-अनुभव अर्जित किए और अपने अनुभवों को आने वाली पीढ़ियों के लिए लिपिबद्ध किया। गिज्जूभाई बच्चों के मन की गहराइयों को मापने वाले पहले भारतीय शिक्षाविद् थे। वे बालकों के मित्रा, हितैषी और उनकी स्वतंत्रता के प्रबल पक्षधर थे। 20 वीं सदी के तीसरे दशक में पारंपरिक और रूढ़िवादी भारतीय समाज में बच्चों की महिमा का बखान करने वाले वे पहले व्यक्ति थे। वर्तमान समय में उनके विचार मूलतः तार्किक हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची:

1. स्वाति जैन "रेविसिटिग गांधियन थॉट इन अर्ली चाइल्डहुडः एन एजुकेशनल एंड फिलोसोफिकल पर्सपेक्टिव" ७ इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ एजुकेशन - मैनेजमंटे स्टडीज १६८ (२०१७).
2. नीना दास "एजुकेशनल फिलसफी ऑफ़ महात्मा गाँधी एंड स्वामी विवेकानंद एंड इटस रेलवेस इन थे प्रेजेंट सिस्टम ऑफ़ एजुकेशन फ्रॉम २०१८-२०२८: कम्प्रेरेटिव स्टडी" ६ इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ क्रिएटिव रिसर्च थॉट्स १२६२ (२०१८).
3. वि आर देविका "महात्मा गाँधी'स आइडियाज फॉर वर्क एंड लाइफः इम्प्लिकेशन्स फॉर करियर डेवलपमेंट एंड करियर गाइडेंस" रिसर्चगटे १२ (२०१४).
4. विपिन "गिजूभाई बधेका का शिक्षा दर्शन गिजूभाई के अनुसार शिक्षा के उद्देश्य पाठ्यक्रम एवं शिक्षण विधियां" हिंदी अमृत (२०२१).
5. मनोज कुमार सिंह "एजुकेशनल कंट्रीब्यूशन ऑफ़ गिजुभाई इन प्राइमरी एजुकेशनः थॉट एंड आइडियाज" इंटरनेशनल जनर्ल ऑफ़ रिसर्च २०८३ (२०१८).
6. देवेंद्र कुमार "महात्मा गाँधी के शैक्षिक विचारों का शिक्षा पर प्रभाव" जनर्ल ऑफ़ एडवांसेज एंड स्कॉलरली रिचर्सस इन अलाइड एजुकेशन १ (२०२२).
7. निर्मला साहू "रेलेवंस ऑफ़ गांधियन थॉट ऑफ़ एजुकेशन इन प्रेजेंट डे कॉन्टेक्स्ट" जर्नल फॉर रिसर्च इन एप्लाइड साइंस एंड इंजीनियरिंग टेक्नोलॉजी १ (२०२२).
8. वन्दना जैन "गिजूभाई का शिक्षा में योगदान" ८ जर्नल ऑफ़ इमजि ंग टेक्ना ेलॉजीज एंड इनोवेटिव रिसर्च ९२१ (२०२१).
9. वन्दना जैन "गिजूभाई का शिक्षा में योगदान" ८ जर्नल ऑफ़ इमर्जिंग टेक्नोलॉजीज एंड इनोवेटिव रिसर्च ९२१ (२०२१).